The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, October 2022
www.theresearchdialogue.com

"मदन मोहन मालवीय और शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण"

डॉ. नीरज यादव

सहायक प्राध्यापक (बी.एड.)

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा

सार

भारत के सामाजिक विकास में मदन मोहन मालवीय का योगदान अद्भुत है क्योंकि उस समय भी उन्होंने दहेज और बाल विवाह की प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई थी। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा की वकालत की और इसके लिए कदम भी उठाए। –**जेबी पटनायक**

परिचय

पंडित मदन मोहन मालवीय (1861–1946) एक भारतीय शिक्षाविद् और स्वतंत्रता सेनानी थे जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका और हिंदू राष्ट्रवाद के उनके समर्थन के लिए उल्लेखनीय थे। बाद में जीवन में, उन्हें 'महामना' के रूप में भी संबोधित किया गया। वह चार मौकों पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे और आज उन्हें एशिया के सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में याद किया जाता है, कला, विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के 12,000 से अधिक छात्र 1916 में वाराणसी में हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में पढ़ते थे, जिसमें वे 1919 से 1938

की अवधि के दौरान कुलपति भी रहे। पंडित मालवीय भारत में स्काउटिंग के संस्थापकों में से एक थे। उन्होंने 1909 में इलाहाबाद से प्रकाशित एक अत्यधिक प्रभावशाली, अंग्रेजी समाचार पत्र, द लीडर की स्थापना की। वे 1924 से 1946 तक हिंदुस्तान टाइम्स के अध्यक्ष भी थे। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप 1936 में इसके हिंदी संस्करण का शुभारंभ हुआ।

मदन मोहन मालवीय का जीवन इतिहास

देशभक्त, शिक्षाविद्, राजनेता, वक्ता, वकील, पत्रकार, समाज सुधारक और एक अद्वितीय संस्था निर्माता पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसंबर, 1861 को प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। उनका जन्म सिराकुंड के कुचा संवलदास के एक छोटे से घर में जिसे डिग्गी (अब मालवीय नगर) के नाम से जाना जाता था हुआ। लाल–मालवीय जी पंडित ब्रजनाथ और मूना देवी की आठ संतानों में पांचवें थे। उन्होंने इलाहाबाद जिला स्कूल से मैट्रिक किया, उस क्षेत्र में कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा आयोजित की गई थी–एक उत्साही शिक्षार्थी और असाधारण छात्र होने के अलावा, मदन मोहन मालवीय संगीत और खेल के लिए समान रूप से भावुक थे। इस क्षेत्र में बांसुरी, सितार जैसे कई पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों पर भी उनकी महारत थी, उन्हें अपने पिता और भाई जय कृष्ण से बहुत कुछ विरासत में मिला था, जो अपने समय के सितार पर एक प्रतिष्ठित वादक थे। (विकिपीडिया, 2022) 1881 में, उन्होंने मिर्जापुर के एक प्रमुख विद्वान के एक असामान्य प्रस्ताव के माध्यम से कुंदन देवी के साथ विवाह किया। 1884 में, उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बीए से सम्मानित किया–तीन साल बाद, इलाहाबाद शहर ने मुइर कॉलेज के परिवर्तन से अपना पहला विश्वविद्यालय प्राप्त किया, जो बाद के चरण में, पूर्वी भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रतीक था। उन्होंने हिंदी और अन्य अनिवार्य सार्वजनिक पहलों के लिए समान रूप से स्वेच्छा से काम किया, जैसे काशी नगरी प्रचारिणी सभा–ये प्रयास भारतीयों के बीच पहचान के पुनरुद्धार के लिए महत्वपूर्ण और प्रासंगिक थे; वकील के रूप में उनका कार्यकाल बहुत प्रभावशाली था जिसे उन्होंने 1932 में चौरी–चौरा घटना, गोलमेज सम्मेलन जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर प्रदर्शित किया।

एक दूरदर्शी शिक्षाविद् के रूप में मालवीय जी

मालवीयजी की कई उपलब्धियों में सबसे महत्वपूर्ण बीएचयू या काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना थी। उनके जीवनकाल में ही बीएचयू को ज्ञान की राजधानी के रूप में जाना जाने लगा, जिसे भारत

और दुनिया भर में स्वीकार किया गया। पंडित मदन मोहन मालवीय ने इस संस्था के साथ भारतीय शिक्षा में इतिहास रचा। उन्होंने सदियों पुरानी शिक्षा, ज्ञान और आध्यात्मिकता की परंपरा के कारण बनारस को साइट के रूप में चुना। उनकी दृष्टि तक्षशिला और नालंदा और अन्य पवित्र संस्थानों के प्राचीन केंद्रों से बुलाई गई सर्वोत्तम भारतीय शिक्षा को पश्चिम के आधुनिक विश्वविद्यालयों की सर्वश्रेष्ठ परंपरा के साथ मिलाना था। एनी बेसेंट, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर, श्यामा चरण डे और कई अन्य जैसे महान दिमाग और व्यक्तित्व ने ज्ञान की खोज में, भारत में राष्ट्रीय भावना को जगाने और शिक्षा और धार्मिकता की शक्ति के साथ स्वतंत्रता जीतने में उनके साथ हाथ मिलाया। वर्ष 1911 में, दरभंगा के महाराजा ने एनी बेसेंट के साथ अपनी योजना को हिंदू विश्वविद्यालय के साथ शामिल किया – उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भी बहुत रुचि ली और लॉर्ड हार्डिंग (तत्कालीन गवर्नर–जनरल) की योजना के साथ मिले। विश्वविद्यालय और उनकी सहमति आसानी से प्राप्त की क्योंकि यह शीर्ष पायदान ब्रिटिश अधिकारी अपने व्यवहार में तुलनात्मक रूप से लचीला था। यद्यपि उनके शिक्षा सचिव, सर हरकोर्ट बटलर प्रस्तावित विश्वविद्यालय में हिंदी की प्रमुखता को देखकर चिंतित हो गए – उन्होंने बीएचयू में शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के लिए जनादेश दिया, जिसे महामना ने समभाव से स्वीकार किया। अंत में वसंत पंचमी के दिन, 4 फरवरी, 1916 को सपना सच हो गया और बीएचयू की आधारशिला लॉर्ड हार्डिंग ने अगस्त सभा और हजारों शहरवासियों की उपस्थिति में रखी। उनके अन्य अस्थायी समझौते जैसे, 13 दिसंबर, 1921 को प्रिंस ऑफ वेल्स को डॉक्टरेट ऑफ लेटर्स प्रदान करना एक असामान्य निर्णय था, जिसे राजनीतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में आलोचना मिली, हालांकि वे अपने तर्क पर खड़े थे क्योंकि उन्होंने शिक्षा के सार्वभौमिकरण को एक महत्वपूर्ण कारक माना था।

अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा पर दृष्टिकोण

मालवीय जी अपने सक्रिय जीवन की शुरुआत से ही भारत के शैक्षिक कारणों के समर्थक थे, जो बाद में बीएचयू की स्थापना के लिए उनकी प्रतिबद्धता में परिलक्षित हुआ। वास्तव में उन्होंने 19 मार्च 1912 को श्री गोखले द्वारा लाए गए प्रारंभिक शिक्षा बिल का समर्थन किया और इसे चयन समिति को संदर्भित करने का सुझाव दिया। परिषद के कुछ मुस्लिम सदस्यों की आशंकाओं में से एक यह था कि उर्दू भाषा के हितों को ठेस पहुँचाने से वह प्रभावित हो सकता है। मालवीय जी का मत था कि हिन्दी और उर्दू बिना किसी समस्या के शिक्षा का माध्यम हैं। इसी तरह इस देश में जाति और कई पंथ इस अधिनियम का स्वागत करेंगे। उन्होंने इस आशंका को भी दूर किया कि अनिवार्य शिक्षा पर

नाराजगी जताई जा सकती है। लेकिन मजबूरी को अपनाने का औचित्य इस धारणा में निहित है कि प्रारंभिक शिक्षा को न केवल सख्ती से बढ़ाया जाना चाहिए, बल्कि अंततः, सार्वभौमिक बनाया जाना चाहिए और यह कि मजबूरी के बिना असंभव है, माता–पिता का अनुपात हमेशा कमजोर या उदासीन रहेगा या अदूरदर्शी या लालची जो अपने कर्तव्य की उपेक्षा करेंगे।

उच्च शिक्षा पर दृष्टिकोण

उनके अनुसार, उच्च शिक्षा एक समावेशी, न्यायसंगत और विविध ज्ञान वाले समाज के निर्माण में बुनियादी निर्माण खंड है। यह आज की दुनिया में विशेष रूप से सच है जहां ज्ञान धीरे–धीरे प्राथमिक उत्पादन संसाधन के रूप में उभर रहा है। 21वीं सदी की नई वास्तविकताओं ने हालांकि उच्च शिक्षा में कई जटिल मुद्दों और चुनौतियों को जन्म दिया है जैसे अंतर्राष्ट्रीयकरण, निजीकरण, गुणवत्ता आश्वासन, शासन, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना, दुर्लभ मानव और वित्तीय संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा आदि। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली इन परिवर्तनों से खुद को बचाने का जोखिम नहीं उठा सकती है। साथ ही इसे स्थानीय संस्कृति और मूल्यों को खतरे में डाले बिना तेजी से बढ़ते वैश्वीकरण की दुनिया की अपेक्षाओं और चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए कि उच्च शिक्षा के उद्देश्य बाजार की ताकतों के अधीन न हो जाएं। शिक्षा की भारतीय दृष्टि ने हमेशा विचारों की बहुलता के साथ–साथ संवाद और वाद–विवाद की समृद्ध परंपरा को प्रोत्साहित किया है। बीएचयू मानव जाति की आवश्यक एकता की स्वीकृति, एकीकरण और प्राप्ति की इस विरासत का प्रतीक है जबकि साथ ही साथ हमारी अनूठी पहचान को संरक्षित करता है। महामना द्वारा प्रस्तावित शिक्षा की योजना आज नए सिरे से महत्व रखती है जब उच्च शिक्षा पहले की तरह चुनौतियों का सामना कर रही है। यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि उच्च शिक्षा एक समावेशी, न्यायसंगत और विविध ज्ञान वाले समाज के निर्माण में बुनियादी निर्माण खंड है।

उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण

महामना की दृष्टि इतनी दूरदर्शी थी कि उन्हें उच्च शिक्षा की बुनियादी समस्याओं के साथ–साथ छात्र की भी जानकारी थी। आज हम जो रो रहे हैं उसके लिए वह अपने समय की समस्या को जानता था। बेरोजगारी और गुणात्मक उच्च शिक्षा की समस्या आज अधिक चिंता का विषय है। फिर

भी हम समाधान खोज रहे हैं। लेकिन महामना के समय में अध्ययन के स्रोत इस तरह तय किए जाने थे कि औसत बुद्धि का छात्रः आधुनिक तरीकों पर पढ़ाया जाने वाला छात्र धन पैदा करने की किसी कला में कुशल हो सकता हैः और उस सिद्धांत में पारंगत हो सकता है जिस पर यह आधारित है। मालवीय ने आत्मनिर्भर समाज के लिए एक नए तरह के स्कूल द्वारा पढ़ाए जाने वाले एक नए तरह के पाठ्यक्रम का सपना देखा था। इसने उन्हें व्यावसायिक अध्ययन के अस्थायी पैटर्न प्रदान करने के लिए बनाया जिसमें खेती और स्वयं सहायता प्रमुख उद्देश्य हैं। उनका यथार्थवादी ध्यान एक उपयुक्त शिक्षा प्रणाली के विचार को समझने के लिए बहुत उत्सुक था जो एक गरीब देश की तत्काल सामाजिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा कर सके।

धार्मिक शिक्षा का एकीकरण

मालवीय की दृष्टि इतनी स्पष्ट और गतिशील थी, जिसे उन्होंने अपने समय में उच्च शिक्षा के लिए कहा था, जो आजकल शोध का विषय है। उन्होंने कहा, "कुछ लोग हैं, मैं पूरी तरह से अवगत हूं, जो संदेह करते हैं कि क्या विश्वास की शिक्षा, साथ–साथ विज्ञान, अच्छे परिणाम के उत्पादक हो सकते हैं। यह मानता है कि, यदि धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं हैं, तो वे कम से कम असंगत हैं।"

शिक्षक पर दृष्टि

शिक्षकों के चयन में मालवीय जी ने देश भर में 'जाल' डाला। उनके पास प्रतिभा के लिए एक शिकारी प्रवृत्ति थी। उन्होंने जहां भी असाधारण प्रतिभा देखी, उन्होंने उसे बीएचयू के लिए हथियाने की कोशिश की। बीएचयू के लिए उनका दृष्टिकोण उपरोक्त सभी विषयों को एक ही स्थान पर समाहित करना था। मदन मोहन मालवीय के अनुसार, "एक शिक्षण विश्वविद्यालय अपना आधा कार्य करता है यदि वह अपने विद्वानों की भावनात्मक–शक्ति को उसी प्रकार विकसित करने का प्रयास नहीं करता है जिसके साथ वह अपनी मानसिक–शक्ति का विकास करता है। इसलिए यह है कि प्रस्तावित विश्वविद्यालय ने युवाओं में चरित्र निर्माण को अपने प्रमुख उद्देश्यों में से एक के रूप में रखा है। यह न केवल मनुष्य को इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, व्यापारियों, धर्मशास्त्रियों के रूप में, बल्कि उच्च चरित्र, सत्यनिष्ठा और सम्मान के व्यक्ति के रूप में भी पेश करने की कोशिश करेगा, जिसका आचरण जीवन के माध्यम से दिखाएगा कि वे एक महान विश्वविद्यालय की पहचान रखते हैं। "

महिला शिक्षा पर दृष्टि

1916 में अपनी स्थापना के समय से ही बीएचयू महिलाओं की शिक्षा के लिए प्रयासरत रहा है। इसके दूरदर्शी संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ने महिला शिक्षा के अत्यधिक महत्व और देश के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका का पूर्वाभास किया। हालांकि, मौजूदा सामाजिक परिवेश एक निवारक साबित हुआ। 14 दिसंबर, 1929 को दिए गए अपने दीक्षांत भाषण में महामना ने बीएचयू के महिला कॉलेज की स्थापना की घोषणा की। नारी शिक्षा का कारण महामना के हृदय को विशेष रूप से प्रिय था। 14 दिसंबर, 1929 को दिए गए अपने दीक्षांत भाषण में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि महिलाओं की शिक्षा का कारण पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वह राष्ट्र निर्माण में बराबर की भागीदार होंगी। इसने ऐसे छात्रों को जन्म दिया है जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई हैः श्रीमती। दुर्गाबाई देशमुख, डॉ सुचेता कृपलानी, डॉ राजेंद्र कुमारी बाजपेयी, डॉ हेमलता स्वरूप, श्रीमती उषा मित्तल और कई अन्य। महिला महाविद्यालय ने न केवल महिलाओं की शिक्षा के शैक्षणिक पहलू से बल्कि अपने छात्रों में सामाजिक–राजनीतिक जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना के विकास के साथ भी संबंध बनाए हैं। 1942 में, महात्मा गांधी ने महिला महाविद्यालय के छात्रों को संबोधित किया और उनसे स्वतंत्रता के कारण की सेवा करने का आग्रह किया। यह संस्था स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल बन गई। असाधारण जोश से प्रेरित और उत्साहित छात्र क्रांति में शामिल हुए। स्नेहलता, कुंती नगर, सुरजीत कौर, हेमलता जसरा, दमयंती जसरा और लीला शर्मा को उनके साहस और राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ भक्ति के लिए हमेशा याद किया जाएगा। कॉलेज ज्ञान में अपना योगदान देने और राष्ट्र की सेवा के वर्तमान अर्थों को संबोधित करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित है। शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता की अपनी गौरवशाली परंपरा के साथ। महिला महाविद्यालय तेजी से बदलते राष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य से उत्पन्न चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर रहा है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा को लेकर महामना की दृष्टि और वैश्वीकरण में कोई अंतर नहीं है। मालवीयजी कभी भी किसी भी सकारात्मक बदलाव के खिलाफ नहीं हैं क्योंकि वह आज इस्तेमाल करते हैं कि अच्छाई या बुराई के लिए, हम सब यहाँ खेल खेलने के लिए हैं" इसलिए यहाँ समय है कि हमें महामना मालवीयजी की दृष्टि की प्रशंसा करनी चाहिए, जिनके जीवन का खेल जीतने के लिए मुख्य कार्ड था 'चरित्र– उद्योग–अखंडता' उनके कथन की कुछ पंक्तियाँ यहाँ

उद्धृत की जा सकती हैं "चरित्र का निर्माण व्यक्ति और समुदाय की भलाई के लिए बुद्धि की खेती से भी अधिक महत्वपूर्ण है" और "एक शिक्षण विश्वविद्यालय अपना कार्य केवल आधा ही करेगा यदि वह अपने विद्वानों की हृदय–शक्ति को उसी लालसा से विकसित करने का प्रयास नहीं करता है जिससे वह उनकी मस्तिष्क शक्ति का विकास करता है। इसलिए यह है कि प्रस्तावित विश्वविद्यालय बीएचयू ने युवाओं में चरित्र निर्माण को अपने प्रमुख उद्देश्य में से एक के रूप में रखा है। मालवीय जी के लिए ईश्वर और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य की भावना को जीवित रखना, अपने साथियों की सेवा करना, लोक कल्याण को बढ़ावा देना और मातृभूमि के लिए सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहना ही उच्च शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य था।

संदर्भ

1. Dwivedi, B. N. (2010). Malaviya's Vision on Science and Technology: Celebrating his150th Birth Anniversary. Current 1492 Science, Vol. 99 (11).

2. Mishra, A. B. (1961). The Purpose of the Hindu University. In Mahamana Malaviyaji Birth Centenary Volume, All-India Malaviya Centenary Celebration Committee, BHU, Varanasi, pp. 119

3. Padmini, R. N. (2010). Homage to Mahamana Malviya: Visionary Educationist Mahamana. Banaras Hindu University, Varansi. Retrieved on February 10, 2013 from http://homagetomahamana.wordpress.com/2010/02/11/visionaryeducationist-mahamana-pt-madanmohan-malaviyaji/

4. Singh, R. H. (2010). Homage to Mahamana. DOI: 10.4103/0975-9476.74088, Retrieved on August 10, from http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3117323/.

5. Yadav, R. S. (2009). Pandit Madan Mohan Malviya: The Man, The Spirit, The Vision. Retrieved on February 7, 2013 from http://bhu.ac.in/mahamana.htm

THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, *October* 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Oct-2022/29

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. नीरज यादव

For publication of research paper title

"मदन मोहन मालवीय और शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-03, Month October, Year- 2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com